

अनेनम् (3. अ + एनम्) 1) adj. *fehlerlos, irrtumlos, schuldlos*: नेपि यो यथा पुराणिनाः प्रूरु मन्यसे RV. 1, 129, 5. प्रति यच्छ्रे अनेनमेनेना अवं द्विता वरुणा मायी नः स्यात् 7, 28, 4. अवं त्वनिनां नमसा तुर इयाम् 86, 4. ÇAT. Br. 3, 8, 7. M. 8, 19. — 2) m. n. pr. ein Sohn Kakutstha's und Vater Pṛth'u's HARIV. 669. VP. 361. Sohn Âju's (Âjus') HARIV. 1476. VP. 406 (vgl. विपाम्नन्). Sohn Kshemâri's (Kshemadhî's) VP. 390.

अनेनस्य n. nom. abstr. vom adj. अनेनम् ÇAT. Br. 3, 9, 4, 17.

अनेना = प्रशस्य NAIGH. 3, 8.

अनेकम् (3. अ + एकम् von ईह्) Uṅ. 4, 223. nom. sg. अनेका st. अनेकाम् P. 7, 1, 94. VOP. 3, 155. 156. AV. 6, 84, 3. 1) adj. a) ohne Nebenbuhler, unvergleichlich, unerreichbar: इकामनेकमेम् RV. 1, 40, 4. मन्त्रम् 6. स्तुभः 3, 51, 3. अनेकसं प्रतरणं विचित्रां मधुः स्वादिष्ठमो पिव VĀLAKH. 1, 4, 2, 4. एवा अस्मिन्नस्मिन्नेनेका तमयस्मयान्वि चूत बन्धपाशान् AV. 6, 84, 3; vgl. VS. 12, 63. von Agni RV. 3, 9, 1. von den Âditja 8, 18, 5. vom Wagen der Açvin 22, 2. — 6, 75, 10. 8, 45, 11. 10, 63, 10. — b) unbedroht, unbehindert: पाहि पयौ (nach PRĪT.) अनेकसा पुरा यत्परुत्सासो RV. 1, 129, 9. 6, 51, 6. VS. 4, 29. अनेका दात्रमदितेरनर्वम् RV. 1, 185, 3. अनेका मित्रार्थमनुवद्गुरुणं शंस्यम् । त्रिवर्त्रयं मरुतो यत् नश्कर्दिः 8, 18, 21. 5, 65, 5. 8, 31, 12. 58, 16. 61, 23. स्वादित्या अदितये स्यामानेकः ÇAT. Br. 1, 5, 4, 17. — 2) m. Zeit AK. 1, 1, 3, 1. 3, 4, 20, 196. H. 126.

अनेपुणा (3. अ + नेपुणा) n. = अनेपुणा P. 7, 3, 30.

अनेश्वर्य (3. अ + ऐश्वर्य) n. = अनेश्वर्य P. 7, 3, 30.

अनेो nicht NILAK. zu AK. 3, 5, 11. im ÇKDR.

अनेककृ (3. अ + शोक - कृ verlassend) 1) adj. *das Haus nicht verlassend*. — 2) m. Baum AK. 2, 4, 4, 5. H. 1114. ÇĀK. Ch. 150, 40. RAGH. 2, 13.

अनेकृत (3. अ + श्रेम - कृत) adj. *nicht von der heiligen Sitze* om begleitet: स्रवत्यनेकृतं पूर्वं (vorn, am Anfange) परस्ताच्च (hinten, am Ende) विशीर्यते M. 2, 74.

अनेवाह्य (अनस् + वाह्य) adj. *auf einem Wagen zu fahren* ÇAT. Br. 1, 1, 2, 6.

अन्त, अन्तति binden Dhātup. 3, 24. Soll nach KĀÇAPA nicht flecirt werden, WRST. — Vgl. अन्द्, इन्त्.

अन्त m. Uṅ. 3, 85. Siddh. K. 249, b, 15. m. n. 251, b, 1. am Ende einer adj. Zusammens. f. झा M. 1, 50. R. 1, 5, 1. 2, 12, 32. 5, 18, 35. 6, 96, 7. KATHIS. 3, 77. mit angefügtem क (अन्तक) TRĪK. 2, 1, 5. 3, 5, 21. H. 242. Accent im comp. nach einer Präposition P. 6, 2, 180. 181. 1) m. Rand, Saum, Grenze, Endpunkt, Ende im Raume H. 962. a. n. 2, 157. द्विवो ऽन्तैभ्यस्परि RV. 1, 49, 3. 92, 11. 10, 8, 1. पृक्कामि त्वा परमत्तं पृथिव्याः — इयं वेदिः परा ऽन्तः पृथिव्याः VS. 23, 61. 62. उभावन्तौ die beiden entgegengesetzten Horizonte AV. 6, 89, 3. 13, 2, 6. 13. अन्तान्वः प्रजा भतीष्ट der Grenzen (des Landes d. h. des werthlosesten Theils) sollen eure Nachkommen thellhaftig werden AIR. Br. 7, 18. यं यमत्तमभिकामा (nach welcher Grenze, nach welcher Gegend immer) भवति यं त्रनपदं च यं क्षेत्रभागे तं तमेवोपत्रोवत्ति KĀHND. UP. 8, 1, 5. 2, 10. लङ्कायां विपयान्तेषु R. 3, 61, 24. गुरुनेष्वाश्रमातेषु in an Einsiedeleien grenzenden Wäldern I, 23. सागरान्तेषु an den Ufern des Meeres 6, 9, 18. तदग्रम् — पद्भोत्करविचित्रात्तम् 3, 15, 6. आकाशात्ते (vom Aether begrenzt) निमग्नासि विवृते शोकासागे 4, 22, 14.

सागरात् oder समुद्रात् adj. f. झा vom Meere begrenzt, ein Beiwort der Erde 1, 5, 1. 2, 12, 32. 5, 18, 35. KATHIS. 3, 77. चित्ता चन्दनकाष्ठात्तम् R. 6, 96, 7. नेत्राणां रक्तात्तानाम् SUND. 3, 27. 4, 11. N. 24, 16. R. 3, 26, 12. 52, 34. 4, 33, 31. वनात् Saum eines Waldes 2, 30, 14. 54, 39. 4, 37, 9. 5, 28, 1. MRGH. 24. मरुतीयमितः सेना सागराभा प्रदृश्यते । नास्यात्तमवगच्छामि मनसापि विचित्तयन् ॥ R. 2, 84, 2. सोमोपनक्तस्य अन्तान् (Gipfel) ÇAT. Br. 3, 3, 2, 18. KĀTJ. ÇR. 7, 7, 20. वस्त्रात् Zipfel eines Gewandes R. 4, 6, 16. 5, 21, 20. N. 5, 26. ÇĀK. 69, 11. AMAR. 2. ÇRĀNGĀRAT. 10. VID. 131. अर्पाङ्गा नेत्रयोरन्तौ AK. 2, 6, 3, 45. H. 579. पादात् Fussende: तेनापि पादात्तेनाक्रात्तः PAÑĀKAT. 167, 17. पादात्ते विनिपत्य SĀH. D. 48, 7. — 2) m. Ende eines Gewebes, Zeltelende, Leiste, Saum: को वो वर्षिष्ठ झा नीरा दिवश्च गमश्च धृतयः । यत्समित्तं न धूनुथ ॥ RV. 1, 37, 6. या अकृत्तमवयन्त्याश्च तन्निरे या देवीरन्तौ अमितो ऽदृत्त AV. 14, 1, 45. ये अन्ता यार्वतीः सिचो य अन्तवो ये च तन्तवः 2, 51. — 3) m. Nähe H. an. 2, 157. VAIĠ. beim Sch. zu ÇIÇ. 20, 22. und KIR. 6, 17. आत्तादा परुकात् RV. 1, 30, 2. 1. सो अयेरन्तं वृषलः पपाद् 10, 34, 4. नाधीयीत श्मशानात्ते ग्रामात्ते M. 4, 116. 11, 78. JĀĪN. 2, 162. जलान्ते 1, 143. गङ्गाप्रपातात्तविव्रुष्यं गङ्गारम् RAGH. 2, 26. अन्ते im Beisein, in Gegenwart ÇAT. Br. 1, 6, 4, 21. गोः 3, 1, 2, 17. यो तु कुमारस्यान्ते वाचमभाषयास्तो मे ब्रूहि 14, 9, 4, 8. (= BRH. ĀR. UP. 6, 2, 5.) KĀHND. UP. 5, 3, 6. अन्योऽन्यामन्त्राणां यत्स्याज्जनात्ते तज्जनात्तिकम् SĀH. D. (1828) 177, 18. अन्तम् am Ende eines comp. bis zu: प्रायणात्तमेकार्कामभिध्यायीत (bis zum Tode) PRAÇNOP. 5, 1. उदकात्तमुपनीय मत्स्यम् MATSJO. 10. अन्तयात्तमुपनीय (चापम्) R. 3, 50, 17. उदकात्ते त्रिगधो ऽनुगम्यते ÇĀK. Ch. 85, 11. अन्तात् von — her: तमावर्तमानम् — वनात्तात् RAGH. 2, 19. झा — अन्तत्तु bis zu: अदकात्तात्त्रिगधो जनेो ऽनुगतव्यः ÇĀK. 54, 21. अन्तरणात् adj. bis zum Tode während HIT. I, 180. — 4) m. n. Ende, Ausgang AK. 3, 2, 30. TRĪK. 3, 3, 145. H. 1459. MB. 1, 2. अन्ते — अन्तौ ÇYETĀÇV. UP. 4, 1. न्हि ते अन्तः शत्रुसः परीणशै RV. 1, 54, 1. 52, 14. न शत्रुरन्तं विविद्वयुधा ते 7, 21, 6. अन्ताय ब्रुवादिनमत्ताय मूकम् VS. 30, 19. अन्तो हि यज्ञस्य समिष्टयनुः ÇAT. Br. 3, 1, 2, 6. 5, 2, 19. 21. 4, 4, 25. तदिगन्तं भवति 1, 9, 2, 14. 3, 4, 4, 26. शम्बवत्तं भवति 2, 2, 23. दुःखस्यान्तं भविष्यति ÇYETĀÇV. UP. 6, 20. जीवितस्यान्तः R. 2, 9, 50. जीवितान्तमुपागमत् DAÇ. 2, 72. अर्कनिशस्यान्ते M. 1, 74. R. 1, 46, 15. HIT. I, 43. RAGH. 4, 1. उन्तोरपि (अन्तः सन्तश्च) दृष्टो ऽत्तस्त्वनयोस्तद्दर्शिभिः BHAG. 2, 16 (SCHL.: discrimen). व्यसनानि डुरन्तानि M. 7, 45. कथात्ते N. 22, 4. VIÇV. 2, 12. सेकात्ते RAGH. 1, 51. तृप्तेनास्त्यन्तो यस्य दर्शनात् AK. 3, 2, 2. एकस्य कष्टस्य न यावदन्तं गच्छाम्यहं पारमिवापवस्य PAÑĀKAT. II, 187. व्यसनं वर्धयत्येव तस्यान्तं नाधिगच्छति 195. अन्तं गम् ÇĀK. 139. (vgl. v. l.) bedeutet sowohl sein Ende erreichen als auch mit Etwas zu Ende gelangen (vgl. अन्तं या v. l. in der letzteren Bedeutung). अन्ते zuletzt, am Schluss ÇĀK. Ch. 155, 14. Die Beziehungen von अन्त Ende am Ende eines adj. comp. zu dem vorangehenden Begriffe und zu dem Begriffe, mit dem das comp. verbunden wird (der 3te Begriff), sind mannichfach: a) der vorangehende Begriff bezeichnet speciell das Ende des 3ten Begriffs: भस्मारो (schliesslich in Asche aufgehend) शरीरम् IÇOP. 17. — b) der vorangehende Begriff ist die Veranlassung, dass der 3te Begriff sein Ende erreicht: कलकात्तानि (durch Streit ihr Ende erreichend) कूर्म्याणि कुवाक्यान्तं च सौकृदम् । कुरावात्तानि राष्ट्र्याणि कुकर्मात्ते यशो नृणाम् ॥ PAÑĀKAT. V, 64. तदन्तं तस्य जीवि-